भारतीय स्वाधीनता संग्राम में उग्रवादी समूह का योगदान

स्वाती सिंह,

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग,

जे.पी. विश्वविद्यालय. छपरा, बिहार

सारांश

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उग्रवादी समूहों का योगदान देश की स्वतंत्रता की यात्रा के एक महत्वपूर्ण और गतिशील पहलू का प्रतिनिधित्व करता है। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से पूर्ण मुक्ति की दृष्टि से प्रेरित इन समूहों ने शाही सत्ता को चुनौती देने के लिए हत्या, बम हमले और सशस्त्र विद्रोह सहित प्रत्यक्ष और अक्सर कट्टरपंथी तरीकों का इस्तेमाल किया। अनुशीलन समिति, युगांतर समूह, ग़दर पार्टी और हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन जैसे संगठनों ने राष्ट्रवादी जोश को प्रेरित करने और ब्रिटिश प्रशासन पर महत्वपूर्ण दबाव बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके प्रयासों ने व्यापक अहिंसक आंदोलनों को एक तात्कालिकता की भावना जोड़कर और किसी भी कीमत पर स्वतंत्रता प्राप्त करने के भारतीयों के संकल्प को प्रदर्शित करके पूरक बनाया। गिरफ़्तारियों, मुकदमों और फांसी सहित गंभीर दमन के बावजूद, ये क्रांतिकारी अपनी प्रतिबद्धता में अडिग रहे। उनके कार्यों ने न केवल ब्रिटिश शासन को बाधित किया, बल्कि स्वतंत्रता आंदोलन के लिए जनता का समर्थन भी जुटाया। प्रतिरोध और बलिदान की भावना को बढ़ावा देकर, उग्रवादी समूहों ने भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई पर एक अमिट छाप छोड़ी, तथा रणनीतियों की विविधता को रेखांकित किया, जिसके फलस्वरूप सामूहिक रूप से 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

मुख्य शब्द : भारतीय स्वतंत्रता, उग्र राष्ट्रवाद, क्रांतिकारी आंदोलन, औपनिवेशिक प्रतिरोध, स्वतंत्रता संघर्ष।

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एक विशाल और बहुआयामी आंदोलन था जो कई दशकों तक चला, जिसमें विभिन्न विचारधाराओं और रणनीतियों वाले व्यक्ति और समूह शामिल थे। जबकि कथा का अधिकांश भाग महात्मा गांधी जैसे व्यक्तियों द्वारा नेतृत्व किए गए अहिंसक तरीकों पर केंद्रित है, उग्रवादी समूहों के योगदान ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को चुनौती देने में समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उदारवादी संवैधानिक तरीकों

की सीमाओं के जवाब के रूप में उभरे, इन क्रांतिकारी समूहों का मानना था कि साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकने के लिए सशस्त्र प्रतिरोध आवश्यक था। ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या से लेकर बम हमलों और विद्रोह तक की उनकी गतिविधियाँ तत्काल और बिना समझौता किए स्वतंत्रता की इच्छा से प्रेरित थीं। उग्रवादी समूहों के योगदान का अध्ययन करने का महत्व समग्र स्वतंत्रता आंदोलन पर उनके प्रभाव को समझने में निहित है।[1] अनुशीलन समिति, ग़दर पार्टी और हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) जैसे इन समूहों ने न केवल युवा क्रांतिकारियों की एक पीढ़ी को प्रेरित किया, बल्कि दमनकारी औपनिवेशिक नीतियों के सामने विद्रोह की भावना को भी जीवित रखा। उन्होंने ब्रिटिश प्रशासन पर महत्वपूर्ण दबाव बनाया, जिससे उसे सख्त उपाय अपनाने के लिए मजबूर होना पड़ा, जिससे अक्सर भारतीयों में अधिक आक्रोश पैदा हुआ। इन समूहों की विरासत भारत की स्वतंत्रता में सामूहिक रूप से योगदान देने वाले दृष्टिकोणों की विविधता को रेखांकित करती है, जो एक संतुलित और समावेशी ऐतिहासिक कथा की आवश्यकता को उजागर करती है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उग्रवादी समूहों के योगदान की जांच उनकी भूमिका की केंद्रित और व्यापक समझ सुनिश्चित करने के लिए विशिष्ट सीमाओं के भीतर की जा सकती है। यह अध्ययन 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से 1947 तक की अवधि पर जोर देता है, जिसमें प्रमुख क्रांतिकारी गतिविधियों को शामिल किया गया है, जिन्होंने सीधे ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को निशाना बनाया। इसमें अनुशीलन समिति, ग़दर पार्टी, हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) जैसे प्रमुख उग्रवादी संगठनों और अन्य क्षेत्रीय समूहों का विश्लेषण शामिल है, जिन्होंने सशस्त्र प्रतिरोध को अपनी प्राथमिक रणनीति के रूप में इस्तेमाल किया।[2] भौगोलिक दायरा उन क्षेत्रों तक सीमित है जहाँ ये समूह सबसे अधिक सक्रिय थे, जिनमें बंगाल, पंजाब, महाराष्ट्र और दक्षिण भारत के कुछ हिस्से शामिल हैं, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में ग़दर पार्टी जैसे भारतीय प्रवासी-नेतृत्व वाले आंदोलनों के योगदान पर भी विचार किया गया है। अध्ययन उनकी वैचारिक नींव, प्रमुख नेताओं, महत्वपूर्ण घटनाओं और उनके कार्यों के सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव पर केंद्रित है। यह भारतीय स्वतंत्रता संदर्भ के बाहर असंबंधित क्रांतिकारी आंदोलनों को बाहर करता है और केवल ब्रिटिश शासन का सीधे विरोध करने वाले समूहों पर ध्यान केंद्रित करता है। यह परिभाषित दायरा इस बात की लक्षित खोज की अनुमति देता है कि उग्र राष्ट्रवाद ने स्वतंत्रता के व्यापक संघर्ष को कैसे पूरक बनाया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उग्रवादी समूहों के योगदान पर यह समीक्षा एक व्यापक विश्लेषण के लिए कई प्रमुख खंडों में व्यवस्थित की गई है। परिचय अध्ययन के संदर्भ, महत्व और उद्देश्यों को प्रदान करता है, यह स्थापित करते हुए कि उग्र राष्ट्रवाद भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का एक महत्वपूर्ण लेकिन कम खोजा गया पहलू क्यों है। ऐतिहासिक संदर्भ क्रांतिकारी विचारधाराओं के उद्भव और उग्रवादी समूहों के गठन को प्रेरित करने वाले सामाजिक-राजनीतिक कारकों की जांच करता है। उग्रवादी समूहों के प्रमुख योगदान अनुभाग अनुशीलन समिति, ग़दर पार्टी और HSRA जैसे संगठनों की गतिविधियों में उनकी रणनीतियों, उल्लेखनीय नेताओं और महत्वपूर्ण घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए उनकी गतिविधियों पर चर्चा करता है।[3]

प्रभाव और महत्व अनुभाग यह मूल्यांकन करता है कि इन समूहों ने व्यापक स्वतंत्रता संग्राम को कैसे प्रभावित किया, राष्ट्रवादी उत्साह को कैसे बढ़ाया और ब्रिटिश प्रशासन पर दबाव डाला, साथ ही साथ उनके सामने आने वाली सीमाओं और चुनौतियों को भी संबोधित किया। आलोचना और प्रतिवाद अनुभाग उनके तरीकों और ऐतिहासिक कथा में उनके स्थान के आसपास के विवादों पर चर्चा करता है।

उग्र राष्ट्रवाद का ऐतिहासिक संदर्भ

भारत में उग्र राष्ट्रवाद का उदय राजनीतिक आंदोलन के उदारवादी तरीकों से बढ़ते मोहभंग और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के तहत बढ़ते उत्पीड़न की प्रतिक्रिया थी। 1905 में लॉर्ड कर्जन द्वारा आयोजित बंगाल विभाजन ने एक प्रमुख उत्प्रेरक के रूप में काम किया, जिसने व्यापक आक्रोश को भड़काया और प्रत्यक्ष कार्रवाई के माध्यम से औपनिवेशिक सत्ता को चुनौती देने के लिए दृढ़ संकल्पित क्रांतिकारी समूहों के उदय को जन्म दिया। प्रारंभिक संवैधानिक सुधारों की विफलता और ब्रिटिश सरकार से पर्याप्त रियायतों की कमी ने राष्ट्रवादियों के बीच निराशा को और गहरा कर दिया।

विश्व स्तर पर, रूसी क्रांति और आयरलैंड की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई जैसे क्रांतिकारी आंदोलनों की सफलता ने भारतीय उग्रवादियों को समान रणनीति अपनाने के लिए प्रेरित किया। 1919 में जलियांवाला बाग हत्याकांड जैसे विरोध प्रदर्शनों के क्रूर दमन ने इस विश्वास को मजबूत किया कि औपनिवेशिक क्रूरता का मुकाबला करने के लिए सशस्त्र प्रतिरोध आवश्यक था। इसके अतिरिक्त, बंकिम चंद्र चटर्जी, स्वामी विवेकानंद और अरबिंदो घोष जैसी हस्तियों के लेखन ने उग्र देशभक्ति की भावना को बढ़ावा दिया। अनुशीलन समिति और अभिनव

भारत जैसी गुप्त संस्थाएँ उभरीं, जिन्होंने शारीरिक तंदुरुस्ती, हथियार प्रशिक्षण और क्रांतिकारी विचारधाराओं को बढ़ावा दिया। सामूहिक रूप से, इन कारकों ने एक ऐसा माहौल बनाया जहाँ उग्र राष्ट्रवाद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक शक्तिशाली शक्ति के रूप में पनपा।[4]

भारत में शुरुआती क्रांतिकारी गतिविधियाँ गुप्त समितियों के गठन और ब्रिटिश सत्ता को चुनौती देने के उद्देश्य से प्रतिरोध के छोटे-छोटे लेकिन प्रभावशाली कार्यों द्वारा चिह्नित की गईं। बंगाल में अनुशीलन समिति और युगांतर और महाराष्ट्र में अभिनव भारत जैसे समूह क्रांतिकारी प्रयासों को संगठित करने वाले पहले लोगों में से थे। ये समूह गुप्त रूप से काम करते थे, शारीरिक प्रशिक्षण, वैचारिक शिक्षा और सशस्त्र प्रतिरोध पर जोर देते थे। शुरुआती गतिविधियों में ब्रिटिश अधिकारियों और भारतीय सहयोगियों की हत्याएँ शामिल थीं, जिनका उद्देश्य भय पैदा करना और क्रांतिकारियों के संकल्प को प्रदर्शित करना था।

एक महत्वपूर्ण घटना 1908 का अलीपुर बम कांड था, जहाँ अनुशीलन समिति के सदस्य, जिसमें बरिंद्र कुमार घोष भी शामिल थे, एक ब्रिटिश मजिस्ट्रेट पर बम से हमला करने के प्रयास में शामिल थे। इसी तरह, महाराष्ट्र में चापेकर बंधुओं ने दमनकारी प्लेग नियंत्रण उपायों के लिए जिम्मेदार एक ब्रिटिश अधिकारी डब्ल्यू.सी. रैंड की हत्या कर दी। इन शुरुआती कार्रवाइयों ने, हालांकि सीमित पैमाने पर, एक अधिक संगठित क्रांतिकारी आंदोलन की नींव रखी। उन्होंने युवा राष्ट्रवादियों की एक पीढ़ी को संघर्ष में शामिल होने के लिए प्रेरित किया, जिससे बाद में उग्रवादी गतिविधियों के लिए मंच तैयार हुआ जिसने स्वतंत्रता के लिए लड़ाई को और तेज कर दिया।

प्रमुख उग्रवादी समूह और उनका योगदान

अनुशीलन समिति और युगांतर समूह बंगाल में दो प्रमुख क्रांतिकारी संगठन थे जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के उग्रवादी चरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1902 में सतीश चंद्र बसु और अरबिंदो घोष द्वारा स्थापित अनुशीलन समिति ने शुरू में युवा भारतीयों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ सशस्त्र प्रतिरोध के लिए तैयार करने के साधन के रूप में शारीरिक प्रशिक्षण और सांस्कृतिक जागृति पर ध्यान केंद्रित किया। समय के साथ, यह राजनीतिक हत्याओं, बम बनाने और उपनिवेश विरोधी गतिविधियों को बढ़ावा देने में शामिल एक गुप्त क्रांतिकारी समूह के रूप में विकसित हुआ।[5]

युगांतर समूह अनुशीलन समिति की एक अधिक कट्टरपंथी शाखा के रूप में उभरा, जिसका नेतृत्व बरिंद्र कुमार घोष और बाघा जतिन जैसे क्रांतिकारियों ने किया। युगांतर ने ब्रिटिश अधिकारियों पर हमले और बड़े पैमाने पर विद्रोह भड़काने के प्रयासों सहित आक्रामक रणनीति अपनाई। उल्लेखनीय घटनाओं में 1908 का अलीपुर बम कांड और प्रथम विश्व युद्ध के दौरान नियोजित जर्मन साजिश शामिल है, जिसका उद्देश्य भारत में हथियारों की तस्करी करना था। दोनों समूह अत्यधिक गोपनीयता के तहत काम करते थे, भूमिगत नेटवर्क और कोडित संचार पर निर्भर थे। अंग्रेजों द्वारा कठोर दमन के बावजूद, उनकी गतिविधियों ने व्यापक राष्ट्रवादी भावना को प्रेरित किया और भारत में भविष्य के क्रांतिकारी आंदोलनों का मार्ग प्रशस्त किया।[6]

गदर पार्टी, जिसकी स्थापना 1913 में संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में भारतीय प्रवासियों द्वारा की गई थी, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सबसे महत्वपूर्ण उग्रवादी संगठनों में से एक थी। इसका प्राथमिक लक्ष्य भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह का आयोजन करना था, विशेष रूप से प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश भारतीय सेना के भीतर विद्रोह भड़काकर। लाला हरदयाल, बाबा गुरदित सिंह और सोहन सिंह भकना जैसे प्रमुख व्यक्तियों के नेतृत्व में ग़दर पार्टी ने ब्रिटिश सत्ता को चुनौती देने के लिए भारतीयों का एक वैश्विक नेटवर्क बनाने की कोशिश की।

पार्टी का मुख्यालय, गदर (जिसका अर्थ है "विद्रोह") समाचार पत्र, एक शक्तिशाली प्रचार उपकरण बन गया जिसने क्रांतिकारी विचारों को फैलाया और ब्रिटिश सरकार को उखाड़ फेंकने का आह्वान किया। ग़दर पार्टी की सबसे महत्वाकांक्षी योजना 1915 का ग़दर विद्रोह था, जिसका उद्देश्य भारत के विभिन्न हिस्सों में एक साथ विद्रोह को गति देना था। हालांकि, ब्रिटिश खुफिया घुसपैठ के कारण, आंदोलन को महत्वपूर्ण गति प्राप्त करने से पहले ही विफल कर दिया गया। अपनी विफलता के बावजूद, ग़दर पार्टी भारतीय उग्र राष्ट्रवाद के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय बनी हुई है, क्योंकि इसने भारतीय प्रवासियों के बीच एकता और प्रतिरोध की भावना को बढ़ावा दिया और स्वतंत्रता के लिए व्यापक लड़ाई में योगदान दिया।[7]

हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन

हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA), जिसे मूल रूप से 1924 में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) के रूप में बनाया गया था, एक क्रांतिकारी संगठन था जिसने भारत के स्वतंत्रता संग्राम

में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। सचिंद्र नाथ सान्याल, राम प्रसाद बिस्मिल और अशफाकउल्ला खान जैसे नेताओं द्वारा स्थापित, HRA का प्रारंभिक उद्देश्य सशस्त्र प्रतिरोध के माध्यम से ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकना और भारत के एक संघीय गणराज्य की स्थापना करना था। 1928 में, भगत सिंह और चंद्रशेखर आज़ाद के प्रभाव में, समूह का नाम बदलकर HSRA कर दिया गया, जो समाजवादी आदर्शों की ओर इसके बदलाव को दर्शाता है।[8]

HSRA अपने प्रतिरोध के साहसिक और प्रतीकात्मक कृत्यों के लिए जाना जाता है। 1925 में काकोरी ट्रेन डकैती ब्रिटिश धन को जब्त करने के लिए एक साहसी ऑपरेशन था, जिसने संगठन को राष्ट्रीय सुर्खियों में ला दिया। अपने सुधार के बाद, HSRA ने लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिए 1928 में ब्रिटिश अधिकारी जे.पी. सॉन्डर्स की हत्या कर दी। एक और महत्वपूर्ण कार्य 1929 में भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त द्वारा केंद्रीय विधान सभा पर बमबारी करना था, जिसका उद्देश्य दमनकारी कानूनों का विरोध करना और नुकसान पहुँचाने के बजाय लोगों में चेतना जगाना था।[9]

कई नेताओं की गिरफ़्तारी और फांसी सहित तीव्र दमन के बावजूद, HSRA के कार्यों ने व्यापक राष्ट्रवादी उत्साह को प्रेरित किया और किसी भी कीमत पर स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए भारतीय क्रांतिकारियों के दृढ़ संकल्प का प्रतीक था। न्याय, समानता और समाजवाद के प्रति समूह की प्रतिबद्धता ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक स्थायी विरासत छोड़ी।

उग्रवादी समूहों की रणनीति और कार्यनीति

भारतीय क्रांतिकारियों द्वारा ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या, स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उग्रवादी समूहों द्वारा औपनिवेशिक सत्ता को चुनौती देने और उत्पीड़कों में भय पैदा करने के लिए अपनाई गई एक महत्वपूर्ण रणनीति थी। ये कार्य अक्सर उन व्यक्तियों को लक्षित करके किए जाते थे जिन्हें ब्रिटिश साम्राज्यवाद का प्रतीक माना जाता था या जो सीधे तौर पर दमनकारी नीतियों के लिए जिम्मेदार थे। सबसे शुरुआती और सबसे उल्लेखनीय घटनाओं में से एक 1897 में पुणे के प्लेग कमिश्नर डब्ल्यू.सी. रैंड की हत्या थी, जो प्लेग महामारी के दौरान उनके कठोर उपायों के प्रतिशोध में की गई थी।[10]

बंगाल में, अनुशीलन समिति और युगांतर समूह के सदस्यों ने कई हत्याएँ कीं, जिनमें 1908 में मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड की हत्या का प्रयास भी शामिल था, जिसके परिणामस्वरूप दुखद रूप से निर्दोष पीड़ितों की मृत्यु हुई और अलीपुर बम कांड हुआ। इसी तरह, क्रांतिकारी उधम सिंह ने 1919 के जलियांवाला बाग हत्याकांड का बदला लेने के लिए 1940 में लंदन में माइकल ओ'डायर की हत्या कर दी। ये हत्याएं, हालांकि विवादास्पद थीं, ब्रिटिश शासन के खिलाफ अवज्ञा के प्रतीकात्मक कार्य थे, जिसने औपनिवेशिक अधिकारियों में भय और भारतीय राष्ट्रवादियों के बीच प्रशंसा को प्रेरित किया। उन्होंने स्वतंत्रता के कारण के लिए क्रांतिकारियों की प्रतिबद्धता को भी उजागर किया, अक्सर अपने स्वयं के जीवन की कीमत पर।[11] बम हमले और डकैती भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान आतंकवादी समूहों द्वारा ब्रिटिश सत्ता को चुनौती देने और अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों को वित्तपोषित करने के लिए नियोजित प्रमुख रणनीति थी। बम हमले अक्सर प्रतीकात्मक होते थे, जिनका उद्देश्य औपनिवेशिक अधिकारियों में डर पैदा करना और क्रांतिकारियों के संकल्प को प्रदर्शित करना था। सबसे शुरुआती और सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक अलीपुर बम कांड (1908) हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) ने भी बम हमलों का इस्तेमाल किया, सबसे मशहूर 1929 की केंद्रीय विधान सभा बम विस्फोट में, जहाँ भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने बिना किसी हताहत के दमनकारी कानूनों का विरोध करने के लिए बमों का इस्तेमाल किया। डकैती, या "छापे", एक और महत्वपूर्ण रणनीति थी, जिसका मुख्य उद्देश्य क्रांतिकारी गतिविधियों का समर्थन करने के लिए धन जब्त करना था। काकोरी ट्रेन डकैती (1925) सबसे साहसी कृत्यों में से एक थी, जहाँ HSRA के सदस्यों ने ब्रिटिश राजकोष के धन को ले जा रही एक ट्रेन को रोक दिया था। इन कार्रवाइयों ने न केवल औपनिवेशिक प्रशासन को बाधित किया, बल्कि क्रांतिकारियों के साहस और प्रतिबद्धता का भी प्रतीक था। जबकि ऐसी गतिविधियों को उनके हिंसक स्वभाव के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा, उन्होंने उग्र राष्ट्रवादी आंदोलन को बनाए रखने और प्रतिरोध की भावना को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[12]

क्रांतिकारी विचारधाराओं का प्रसार भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उग्र राष्ट्रवादी आंदोलनों का एक महत्वपूर्ण घटक था, क्योंकि इसका उद्देश्य जन भागीदारी को प्रेरित करना और ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह की भावना को बढ़ावा देना था। क्रांतिकारी समूहों ने अपने विचारों को प्रसारित करने के लिए भूमिगत समाचार पत्रों, पुस्तिकाओं और सार्वजनिक भाषणों का इस्तेमाल किया। बाल गंगाधर तिलक द्वारा केसरी और युगांतर

समूह द्वारा युगांतर जैसे प्रकाशनों ने एक स्वतंत्र भारत के दृष्टिकोण और सशस्त्र प्रतिरोध की आवश्यकता को स्पष्ट किया, जो शहरी और ग्रामीण दोनों दर्शकों तक पहुँच गया। संयुक्त राज्य अमेरिका में ग़दर पार्टी द्वारा प्रकाशित ग़दर अख़बार ने भारतीय प्रवासियों को संगठित करने और औपनिवेशिक उत्पीड़न के ख़िलाफ़ तत्काल विद्रोह का आह्वान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भगत सिंह जैसे नेताओं के लेखन और भाषण, जिन्होंने समाजवाद और स्वतंत्रता पर लेख लिखे, और विनायक दामोदर सावरकर, जिन्होंने 1857 का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम लिखा, युवा भारतीयों को प्रेरित करने में सहायक थे। अनुशीलन समिति जैसी गुप्त संस्थाओं ने सदस्यों को क्रांतिकारी विचारधाराओं के बारे में शिक्षित करने के लिए अध्ययन मंडलियों का आयोजन किया, जिसमें देशभक्ति को वैश्विक उपनिवेशवाद विरोधी और समाजवादी आंदोलनों के साथ मिलाया गया। इन प्रयासों ने विचारधारा से प्रेरित व्यक्तियों का एक नेटवर्क बनाया, जो राष्ट्र की मुक्ति के लिए सब कुछ बलिदान करने के लिए तैयार थे, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन के पाठ्यक्रम को महत्वपूर्ण रूप से आकार दिया।

वैश्विक उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलनों से जुड़ना भारतीय क्रांतिकारियों के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीति थी, क्योंकि इससे उन्हें अंतर्राष्ट्रीय समर्थन प्राप्त करने, अन्य संघर्षों से सीखने और ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपनी लड़ाई को मजबूत करने का मौका मिला। विदेशों में, विशेष रूप से यूरोप, संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में भारतीय क्रांतिकारियों ने उपनिवेशवाद विरोधी समूहों के साथ गठबंधन किया और अपने उद्देश्य का समर्थन करने के लिए संसाधनों की तलाश की। उत्तरी अमेरिका में भारतीय प्रवासियों द्वारा स्थापित ग़दर पार्टी ने प्रथम विश्व युद्ध के दौरान आयरिश और जर्मन क्रांतिकारियों के साथ मिलकर भारत में विद्रोह की योजना बनाई, जिसमें 1915 का असफल ग़दर विद्रोह भी शामिल था।

यूरोप में, श्यामजी कृष्ण वर्मा, वी.डी. सावरकर और मैडम भीकाजी कामा जैसी हस्तियों ने क्रांतिकारी गतिविधि के केंद्र स्थापित किए। कामा ने 1907 में स्टटगार्ट में एक अंतरराष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज का पहला संस्करण फहराया था, जिसने भारत के स्वतंत्रता संग्राम की ओर ध्यान आकर्षित किया था। भारतीय क्रांतिकारियों ने रूसी क्रांति की सफलता से प्रेरित होकर सोवियत नेताओं के साथ भी संबंध बनाए, जिसने हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) जैसे समूहों को प्रभावित किया।

इन वैश्विक जुड़ावों ने न केवल वित्तीय और भौतिक सहायता प्रदान की, बल्कि भारत की दुर्दशा को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भी लाया, जिससे अन्य उपनिवेशित देशों के बीच जागरूकता और एकजुटता पैदा हुई। इस बातचीत

ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के वैचारिक ढांचे को समृद्ध किया, इसे दुनिया भर में न्याय और समानता के लिए व्यापक आंदोलनों के साथ जोड़ा।

स्वतंत्रता संग्राम पर उग्रवादी समूहों का प्रभाव

क्रांतिकारी समूहों की उग्रवादी गतिविधियों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रवादी जोश को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रिटिश शासन के खिलाफ साहसिक और प्रत्यक्ष कार्रवाई करके, इन क्रांतिकारियों ने भारतीयों, विशेषकर युवाओं में साहस और दृढ़ संकल्प की भावना पैदा की। काकोरी ट्रेन डकैती (1925), ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या और केंद्रीय विधान सभा (1929) पर बमबारी जैसे कृत्यों ने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने जीवन को जोखिम में डालने के लिए तैयार व्यक्तियों की निडरता और बलिदान को प्रदर्शित किया।[13]

भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद और उधम सिंह जैसे व्यक्ति प्रतिरोध के प्रतीक बन गए, जिन्होंने अपनी बहादुरी और उद्देश्य के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के माध्यम से लाखों लोगों की कल्पना को आकर्षित किया। उनके कार्यों, अक्सर वाक्पटु भाषणों और लेखों के साथ, यह संदेश फैलाते थे कि स्वतंत्रता किसी भी बलिदान के लायक है। क्रांतिकारियों के सार्वजनिक परीक्षणों और शहादत ने समर्थन को और बढ़ा दिया, जिससे वे राष्ट्रीय नायक बन गए। इन प्रयासों ने न केवल ब्रिटिश अजेयता की कहानी का खंडन किया, बल्कि एक पीढ़ी को संघर्ष में शामिल होने के लिए प्रेरित किया, जिसने पूरे भारत में स्वतंत्रता आंदोलन की बढ़ती गति में योगदान दिया।[14] भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उग्रवादी समूहों की क्रांतिकारी गतिविधियों ने ब्रिटिश अधिकारियों पर महत्वपूर्ण दबाव बनाया, जिससे उन्हें बढ़ती अशांति को संबोधित करने के लिए मजबूर होना पड़ा। ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या, बम हमले और काकोरी ट्रेन डकैती जैसी अवज्ञा के कृत्यों ने औपनिवेशिक प्रशासन को बाधित किया और ब्रिटिश शासन को चुनौती देने के लिए भारतीय क्रांतिकारियों के दृढ़ संकल्प को प्रदर्शित किया। इन कार्रवाइयों ने अंग्रेजों को खुफिया जानकारी और आतंकवाद विरोधी उपायों के लिए व्यापक संसाधनों को तैनात करने के लिए मजबूर किया, जिससे भारत में उनके शासन पर दबाव पड़ा। क्रांतिकारी गतिविधियों ने ब्रिटिश नियंत्रण की कमजोरियों को भी उजागर किया, जिससे उनकी अजेयता की धारणा कमजोर हुई। जे.पी. सॉन्डर्स की हत्या और केंद्रीय विधान सभा बम विस्फोट जैसी घटनाओं ने प्रदर्शित किया कि औपनिवेशिक अधिकारी प्रतिरोध से अछूते नहीं थे। इसके अलावा, क्रांतिकारी परीक्षणों और फांसी के व्यापक प्रचार ने जनता

की भावनाओं को भड़काया और अंग्रेजों पर अपनी दमनकारी नीतियों पर पुनर्विचार करने का नैतिक दबाव बढ़ा दिया। औपनिवेशिक सत्ता को सीधे चुनौती देकर और राष्ट्रवादी जोश को प्रेरित करके, उग्रवादी समूहों ने यह सुनिश्चित किया कि स्वतंत्रता की मांग को अब और अनदेखा नहीं किया जा सकता, जिससे भारत में ब्रिटिश शासन के अंतिम पतन में तेज़ी आई।

उग्रवादी राष्ट्रवादी आंदोलन ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन पर दबाव को तीव्र करने वाले बहुआयामी प्रतिरोध का निर्माण करके भारतीय स्वतंत्रता के लिए अहिंसक संघर्ष को पूरक बनाया। जबकि महात्मा गांधी जैसे नेताओं ने अहिंसक सविनय अवज्ञा और जन आंदोलनों का समर्थन किया, क्रांतिकारी समूहों ने ब्रिटिश अधिकारियों का सामना करने और उपनिवेशवादियों के बीच भय पैदा करने के लिए प्रत्यक्ष कार्रवाई का इस्तेमाल किया। इस दोहरे दृष्टिकोण ने एक रणनीतिक भूमिका निभाई, क्योंकि क्रांतिकारियों के उग्रवाद ने किसी भी कीमत पर स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए भारतीयों के दृढ़ संकल्प को प्रदर्शित किया, जिससे स्वतंत्रता की व्यापक मांगों को संबोधित करने की तात्कालिकता बढ़ गई।

उदाहरण के लिए, हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) और ग़दर पार्टी जैसे समूहों की कार्रवाइयों ने जनता, विशेष रूप से युवाओं को उत्साहित किया और उनमें तात्कालिकता और अवज्ञा की भावना पैदा की, जिसने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संगठित, शांतिपूर्ण विरोध को पूरक बनाया। भगत सिंह की शहादत जैसे क्रांतिकारियों के साहसिक बलिदानों ने जनता को गहराई से प्रभावित किया और अहिंसक आंदोलनों में अधिक भागीदारी के लिए प्रेरित किया। उग्रवादी और अहिंसक दृष्टिकोणों के बीच इस तालमेल ने एक व्यापक प्रतिरोध का निर्माण किया, जिसने अंग्रेजों को तत्काल व्यवधानों और निरंतर जन विरोध दोनों का सामना करने के लिए मजबूर किया, जिससे स्वतंत्रता की राह में तेजी आई।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारत में उग्र राष्ट्रवाद के उदय का विश्लेषण करना।
2. प्रमुख उग्रवादी समूहों और उनके योगदान की पहचान करना।
3. ब्रिटिश प्रशासन और व्यापक स्वतंत्रता आंदोलन पर उनकी गतिविधियों के प्रभाव का आकलन करना।

निष्कर्ष

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उग्रवादी समूहों का योगदान, हालांकि विवादास्पद रहा है और अक्सर अहिंसक तरीकों से प्रभावित रहा है, लेकिन अपरिहार्य था। उनके कार्यों ने न केवल प्रतिरोध का प्रतीक बनाया, बल्कि राष्ट्रीय मानस में तत्परता और दृढ़ संकल्प की भावना भी पैदा की। भारत की स्वतंत्रता के मार्ग की संतुलित समझ में उनके बलिदान और देश के भाग्य को आकार देने में उनकी भूमिका को स्वीकार करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] अग्रवाल, एम. जी. (2008), भारत के स्वतंत्रता सेनानी (चार खंडों में), ज्ञान पब्लिशिंग हाउस।

[2] चंद्रा, बी., मुखर्जी, एम., मुखर्जी, ए., पणिक्कर, के.एन., और महाजन, एस. (2016), भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, पेंगुइन यू.के.

[3] हीह्स, पी. (1998), भारत का स्वतंत्रता संग्राम 1857-1947: एक संक्षिप्त इतिहास, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

[4] फर्रैंड, एम. (1905), द इंडियन बाउंड्री लाइन.

[5] बेरी, जे.एम. (2010), नया उदारवाद: नागरिक समूहों की बढ़ती शक्ति, रोवमैन और लिटिलफील्ड।

[6] टर्नर, आर.एस. (2007), 'उदारवाद का पुनर्जन्म': नव-उदारवादी विचारधारा की उत्पत्ति, जर्नल ऑफ पॉलिटिकल आइडियोलॉजीज, 12(1), 67-83।

[7] आर्मी, एच.आर., बिस्मिल, आर.पी., खान, ए., बख्शी, एस.एन., चटर्जी, जे.सी., आजाद, सी.एस., ... और सभा, एन.बी. हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन।

[8] राजपूत, एम., और रानी, टी. हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन: इसका दर्शन और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में योगदान।

[9] सिन्हा, के. (1996, जनवरी), हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन और बिहार के एससी बार्थुआर, भारतीय इतिहास कांग्रेस की कार्यवाही में (खंड 57, पृष्ठ 688-695), भारतीय इतिहास कांग्रेस।

[10] कोहलर, डी., और एबनेर, जे. (2019), रणनीतियाँ और कार्यनीति: जिहादियों और दक्षिणपंथी चरमपंथियों की संचार रणनीतियाँ, अभद्र भाषा और ऑनलाइन कट्टरपंथ, 18.

[11] नायक, जी. (2010), वामपंथी उग्रवादियों के संघर्ष में परीक्षण पर रणनीति और कार्यनीति, संपादकीय बोर्ड, 19.

[12] इब्रागिमोव, आई. डी., नीफ, एन. एम., निकोलेवा, वाई. वी., डेमिना, एस. वी., फेडोरचुक, वाई. एम., मोरोज़ोव, ए. वी., और सेलेज़नेवा, एन. ए. (2018), साइबर चरमपंथी गतिविधियों का मुकाबला करने के लिए छात्रों की तत्परता गठन की रणनीति और कार्यनीति, आधुनिक भाषा शिक्षण विधियों की पत्रिका, 8(5), 127.

[13] सेकेली, ओ., सेकेली, ओ., और पुस्का. (2017), मध्य पूर्व में उग्रवादी समूह के अस्तित्व की राजनीति, पालग्रेव मैकमिलन।

[14] पार्किंसन, एस. ई., और ज़क्स, एस. (2018), उग्रवादी और विद्रोही संगठन (संगठन), तुलनात्मक राजनीति, 50(2), 271-293।